

विशेष- जब किसी वाक्य में दो कर्म प्रयुक्त हों तो जो कर्म पहले प्रयुक्त होता है वह 'सजीव, परसर्ग सहित और गोण कर्म' होता है तथा बाद में प्रयुक्त होने वाला कर्म 'निजीवि, परसर्ग सहित और मुख्य कर्म' होता है-

जैसे- हरीश पक्षियों को दाना चुगाता है।

→ सजीव	→ निजीवि
→ परसर्ग सहित	→ परसर्ग सहित
→ गोण कर्म	→ मुख्य कर्म

② प्रयोग/रचना के आधार पर क्रिया:-

- (i) → सामान्य क्रिया
- (ii) → संयुक्त "
- (iii) → पूर्वकालिक "
- (iv) → प्रेरणार्थक "
- (v) → नामधातु "
- (vi) → कृदन्त "
- (vii) → सज्जतीय "
- (viii) → सहायक "

(i) सामान्य क्रिया-

जब किसी वाक्य में क्रिया की सामान्य-स्थिति का बोध कराया जाता है, सामान्य क्रिया कहलाती है-

जैसे- बच्चा रोया, लड़का हँसा, कुत्ता भौंका,
मनीष आया, सीमा गई, रेखा चली।

(ii) संयुक्त क्रिया-

जब किसी वाक्य में दो अलग-अलग मूल धातु की क्रियाएँ प्रयुक्त हों, संयुक्त क्रिया कहलाती है-

जैसे - सीमा ने खाना खा लिया है। रमेश ने पुस्तक ख दी है।
 बच्चों ने गृहकार्य पूरा कर लिया है।
 मिस्त्री ने मकान बना दिया है।

(iii) पूर्वकालिक क्रिया-

जब किसी वाक्य में दो भिन्नार्थक क्रियाएँ प्रयुक्त हों, उनमें से जो क्रिया पहले सम्पन्न होती है, पूर्वकालिक क्रिया कहलाती है -

जैसे- सतीश खाना खाकर चला गया। बच्चा दूध पीकर सो गया।

विशेष- पूर्वकालिक क्रिया की पहचान के लिए वाक्य में प्रयुक्त क्रिया के साथ 'कर/करके' जुड़ा रहता है।

(iv) प्रेरणार्थक क्रिया-

जब किसी वाक्य में कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी और को कार्य करने के लिए प्रेरित करता है, तो वहाँ प्रेरणार्थक क्रिया कहलाती है-

जैसे- नितेश योगी से पत्र लिखवाता है।
सीमा सीमा से खाना पकवाती है।
बच्चे अध्यापक से चित्र बनवाते हैं।

(V) नामधातु क्रिया-

जब किसी संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण से क्रिया का निर्माण हो अर्थात् संज्ञा/सर्वनाम/विशेषण से बनने वाली क्रिया, नामधातु क्रिया कहलाती है-

जैसे- भाज-भाजाना, शर्म-शर्मना, मुस्कुराहल-मुस्कुराना
घबराहल-घबराना, रंग-रंगना/रंगाना, मेल-मिलना,
अपना-अपनाना इत्यादि

(vi) कृदन्त क्रिया-

जब किसी क्रिया की मूल धातु के साथ प्रत्यय का प्रयोग किया जाए, तो उससे बनने वाली क्रिया, कृदन्त क्रिया कहलाती है-

जैसे- चल + ल = चलल, चल + ना = चलना, चल + कर = चलकर
 हैंस + ना = हैंसना, हैंस + ल = हैंसल, हैंस + कर = हैंसकर

(vii) सजातीय क्रिया-

जब किसी वाक्य में एक ही मूलधातु से दो क्रियाओं का निर्माण हो रहा हो, तो वे सजातीय क्रिया कहलाती हैं-

जैसे- पढ़ < पढ़ाई, पढ़ी
भड़ < भड़ाई, भड़ी
चढ़ < चढ़ाई, चढ़ी

भारत ने पाकिस्तान से भड़ाई भड़ी।
मुकेश ने स्म.सू. की पढ़ाई पढ़ी।
मंगेश ने पहाड़ की चढ़ाई चढ़ी।

(Viii) सहायक क्रिया— जब किसी वाक्य में मुख्य क्रिया

की सहायता के लिए कोई दूसरी क्रिया प्रयुक्त की जाती है, लेकिन उसका स्वतंत्र कोई अर्थ नहीं होता, सहायक क्रिया कहलाती है—

जैसे - रोगी ने दवा पी हैं। नानी ने कहानी सुनाई हैं।